बी.एस.ओ.सी.-133 : समाजशास्त्रीय सिद्धांत
अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : BAG/ BAM
पाठ्यक्रम कोडः **BSOC-133**
सत्रीय कार्य कोड : **बी.एस.ओ.सी. -133 /ए.एस.एस.टी./TMA/2026-27**
अधिकतम अंकः **100**

नोटः यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित हैं।

सत्रीय कार्य – I

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1. कार्ल मार्क्स की विचारधारा (Ideology) की अवधारणा का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए तथा समकालीन मीडिया और संस्कृति को समझने में इसकी प्रासंगिकता की चर्चा कीजिए 20

2. इमाइल दुर्खीम के समाजशास्त्रीय पद्धतिगत दृष्टिकोण की विवेचना कीजिए। उन्होंने समाजशास्त्र को एक स्वतंत्र वैज्ञानिक अनुशासन के रूप में किस प्रकार स्थापित किया? 20

सत्रीय कार्य – II

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3. मैक्स वेबर की 'आदर्श प्रकार' (Ideal Type) की अवधारणा की व्याख्या कीजिए तथा समाजशास्त्रीय विश्लेषण में इसकी उपयोगिता का मूल्यांकन कीजिए। 10

4. आर्थिक संरचना और सामाजिक संस्थाओं के मध्य संबंध के विषय में मार्क्स के विचारों की चर्चा कीजिए। 10

5. आधुनिक समाज के अध्ययन के संदर्भ में दुर्खीम और वेबर के दृष्टिकोणों की तुलना कीजिए। 10

सत्रीय कार्य – III

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6. वस्तु-पूजावाद (Commodity Fetishism) से आप क्या समझते हैं? 06

7. एनोमी (Anomie) की परिभाषा दीजिए तथा इसके कोई दो परिणाम बताइए। 06

8. शक्ति (Power) और वैध सत्ता (Authority) में अंतर स्पष्ट कीजिए। 06

9. पद्धतिगत व्यक्तिवाद (Methodological Individualism) से आप क्या समझते हैं? 06

10. युक्तिकरण (Rationalisation) पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। 06

1. कार्ल मार्क्स की विचारधारा (Ideology) की अवधारणा का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए तथा समकालीन मीडिया और संस्कृति को समझने में इसकी प्रासंगिकता की चर्चा कीजिए। 20

उत्तर

प्रस्तावना और वैचारिक आधार

कार्ल मार्क्स के समाजशास्त्रीय चिंतन में विचारधारा केवल राजनीतिक विचारों या किसी दल के सिद्धांतों का नाम नहीं है। यह उन विचारों, विश्वासों, मूल्यों और सामाजिक धारणाओं की व्यवस्था है जिनके माध्यम से लोग अपनी सामाजिक परिस्थितियों को समझते हैं। मार्क्स ने इसे भौतिक जीवन, उत्पादन संबंधों, वर्ग-हितों और सत्ता-संबंधों से जोड़कर देखा। उनका प्रश्न था कि असमान समाज में प्रभुत्व रखने वाली व्यवस्था अधिकांश लोगों को स्वाभाविक, न्यायसंगत और अपरिवर्तनीय क्यों दिखाई देती है। विचारधारा की अवधारणा इसी प्रश्न को समझने का साधन है।

मार्क्स के ऐतिहासिक भौतिकवाद के अनुसार मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उत्पादन करता है। उत्पादन के साधनों पर किसका नियंत्रण है और उत्पादन का संगठन कैसे किया गया है, इससे सामाजिक वर्ग तथा उनके हित निर्मित होते हैं। कानून, राजनीति, शिक्षा, धर्म और सांस्कृतिक धारणाएँ इस ऐतिहासिक जीवन-प्रक्रिया के साथ संबंध रखती हैं। इसे सामान्यतः आर्थिक आधार और वैचारिक-अधिरचनात्मक संस्थाओं के संबंध के रूप में समझाया जाता है। किंतु इस संबंध को ऐसा यांत्रिक नियम नहीं मानना चाहिए कि अर्थव्यवस्था हर विचार को तत्काल और पूर्ण रूप से निर्धारित कर देती है।

शासक वर्ग के विचार और मिथ्या चेतना

मार्क्स तथा एंगेल्स ने 'जर्मन विचारधारा' में इस तथ्य पर बल दिया कि जिस वर्ग का भौतिक उत्पादन के प्रमुख साधनों पर नियंत्रण होता है, वह विचारों के उत्पादन और प्रसार के साधनों पर भी प्रभाव डाल सकता है। इस अर्थ में शासक वर्ग के विचार व्यापक समाज में प्रमुख विचार बन सकते हैं। उदाहरण के लिए पूँजीवादी व्यवस्था में निजी स्वामित्व, प्रतियोगिता तथा बाजार की